

श्री सत्यनारायण कथा चालीसा

रचयिता -
पं. श्रीगदाधर पारीक

खेमराज श्रीकृष्णदास
प्रकाशन

संस्करण- सन् २००० सम्वत्२०५७

मूल्य ४ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

॥ श्रीमते नारायणाय नमः ॥

श्रीसत्यनारायण कथा चालीसा

दोहा

तीर्थ नैमिषारण्य की महिमा बड़ी महान ।
भूतल पर यह तीर्थ है श्रीवैकुण्ठ समान ॥
श्री शौनक ऋषि मुनि सभी, मिलकर संत-समाज ।
प्रश्न सूतजी से किया, कृपा करो ऋषिराज ॥

चौपाई

कौन तपस्या व्रत तप भारी।
पूर्ण करे मन इच्छा सारी।।
श्रीयुत सूत महामुनि ज्ञानी।
सकल शास्त्र वक्ता विज्ञानी।।

सत्यदेव की महिमा गायी ।
ऋषियों को यह कथा सुनाई ।।
एक समय नारद मुनि ज्ञानी ।
पर उपकार करन मन ठानी ।।
नारद मृत्यु लोक में आये ।
दुःख दारिद्र्य व्यथित जान पाये ।।

नारद देख विकल सब लोगा।
कैसे कष्ट दूर यह होगा॥
सोचा मन प्रभु सन्मुख आये।
वीणा पर श्रीहरि गुण गाये॥
नारद प्रभु को शीश झुकाया।
मृत्युलोक वृत्त उन्हें सुनाया॥

श्रीहरि से मुनि प्रश्न विचारा ।
कैसे सुखी रहे संसारा ॥
तब श्रीहरि जो व्रत बतलाया ।
सुनकर नारद मुनि हर्षाया ॥
सत्य कथा - व्रत विधि समझाई ।
नारद ने जग को बतलाई ॥

विप्र एक दुर्बल धन हीना।
दुःखित दरिद्री था अति दीना॥
प्रतिदिन भिक्षा के हित जाता।
कठिनाई से भिक्षा पाता॥
सत्यदेव दीनन परिपालक।
भक्तजनों के सदा सहायक॥

विप्र रूप धर श्रीहरि आये।
भिक्षुक को व्रत नियम बताये॥
व्रत प्रभाव से अति धन पाया।
सब विप्रन में श्रेष्ठ कहाया॥
कोटिपति बन गया भिखारी।
अतुलित वैभव का अधिकारी॥

ब्राह्मण निज वैभव अनुसारा।
कथा श्रवण रत था परिवारा॥
सत्यदेव की अद्भुत माया।
दीन लकड़हारा धन पाया॥
उसने व्रत विधि पूर्वक कीना।
सत्यदेव ने वैभव दीना॥

राजा धर्म परायण भारी ।
पतिव्रता सुन्दर थी नारी ॥
नदी किनारे नृप अरु रानी ।
सत्यदेव व्रत सुनी कहानी ॥
सन्तति सम्पति सुख की दाता ।
सदा सर्वदा विजय प्रदाता ॥

साधो वैश्य कथा नहीं कीन्ही ।
तब प्रभु ने अति विपदा दीनी ॥
जब जब प्रभु को वह बिसराया ।
कठिन दुःख जीवन में आया ॥
राजा कर प्रसाद अपमाना ।
कष्ट सहे नृप ने तब नाना ॥

राज पाट गृह सुख संसारा।
नष्ट हुवा सुत धन परिवारा॥
सत्यदेव शरण जब आया।
फिर वैभव धन सुत सुख पाया॥
जो जन सुख सन्तति धन चाहे।
वह अवश्य यह कथा करावे॥

सुख शान्ति का लघु उपाय है।
सत्य हरि करते सहाय है॥
पत्र पुष्प फल भेंट चढ़ाकर।
माप सवाया भोग लगाकर॥
धूप दीप पंचामृत श्रीफल।
तुलसी केला श्रीगंगा जल॥

फल मिष्ठन्न करे हरि अर्पित।
करे कथा भगवान समर्पित॥
भक्तों के सब कार्य सुधारे।
दुःख दारिद्र्य कष्ट भय टारे॥
कलियुग में महिमा अति भारी।
जो व्रत कथा करे नर - नारी॥

जय श्रीसत्यदेव नारायण ।
भक्तों के कारज सारायण ॥
स्कन्द पुराण खण्ड श्री रेवा ।
महिमा वर्णित श्रीसत्यदेवा ॥
जो अति सूक्ष्म कर समझाई ।
भक्त "गदाधर" महिमा गायी ॥

पाठ करें जो यह सौ बारा।
भरा रहे धन का भण्डारा॥
जो चालीसा सुने सुनाये।
सत्यकथा - व्रत का फल पाये॥

दोहा

भक्तों की मन कामना करें सफल भगवान ।
सत्यदेव भगवान की कथा पवित्र महान ।।

।। श्रीसत्यनारायण भगवान की जय ।।

रचयिता - पं. श्रीगदाधर पारीक,
बम्बई

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

